International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 1, Jan-Feb, 2022, Impact Factor: 7.326

हिमाचल प्रदेश की लोक गाथाओं का इतिहासिक एवं अनुसंधान की दृष्टि से महत्व एवं उपयोगिता

डॉ0 हेमराज

सहायक आचार्य कण्ठ संगीत, राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय चौड़ा मैदान, शिमला (हि0प्र0)

सार संक्षेपिका

हिमाचल प्रदेश के लोक गाथाओं में लोक जनमानस ने श्रोत परंपरा के आधार पर प्रचलित लोक कथाओं को जिनमें धार्मिक, वीरात्मक व प्रेमाख्यानात्मक गाथाओं में वर्णित है, प्रचीन समय से ही संजोने का प्रयास किया है, जो यत्र तत्र बिखरे पड अनमोल मोतियों के समान है। अनुसंधान की दृष्टि से ऐसी लोक गाथाओं को संजोकर एवं संग्रहित उनके ऐतिहासिकता के परिपेक्ष में जांचा परखा जा सकता है तथा उन भूली बिसरी कड़ियों को फिर से जोड़कर इतिहास की व्याख्या तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में की जा सकती है। इन लोक गाथाओं में इतिहास के संदर्भों को मुख्य रूप से दो परिपेक्ष में वर्गीकृत कर देखा जा सकता है। 1 प्रकृति का इतिहास व 2 पृथ्वी पर मानव का इतिहास। प्रकृति के इतिहास के अंतर्गत आदि शक्ति ब्रह्मा की सृष्टि की उत्पत्ति, मन्वंतर क 6 लोगों एवं सातवें मन्वंतर की सृष्टि के संकेत निहित है, जबकि दूसरी पृथ्वी पर मानव के इतिहास के अंतर्गत मानव की उत्पत्ति से लेकर मानव की सभ्यता के विकास की घटनाओं का आकलन किया जाता है। लोक संगीत में निहित लोक कथाएं इतिहास की दृष्टि से मात्र युगयुगीन इतिहास के कालक्रम को समझने हेतु ही नहीं अपितु लाक संगीत के साथ उस परमपरा को संजोए रखने के योगदान को भी परिलक्षित करता है।

बीज शब्दः लोकगाथा, इतिहास, संगीत, लोक संगीत, सृष्टि गाथा, वीरगाथा, प्रेमाख्यान हिमाचली लोकगाथाएं, लोक परंपराएं एवं देव भारथा।

भूमिका : –

लोक गाथाओं के संदर्भ में गाथा अत्यंत प्राचीन शब्द है वैदिक वाङमय में से आरंभ होकर लोकगाथा ब्राम्हण, अरण्यक, उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराणों तक गाथा शब्द निरंतर गतिशील रहा है। संस्कृत भाषा के बाद प्राकृत भाषा के विकास के विद्वज्जनां ने जीवन चरित्र को प्राकृत में ही उल्लेखित कर सारी कथाओं को गाथाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अनुसंधान की दृष्टि से ऐसी लोक गाथाओं को संजोकर एवं संगठित कर ऐतिहासिकता के परिपेक्ष में जांचा परखा जा सकता है।

आदिकाल से ही लोक गाथा लोक गाथाएं संगीत के माध्यम से जनमानस में लोग इतिहास को संजोने में विशेष भूमिका का निर्वहन करती आई हैं। जिनके माध्यम से विभिन्न कथानक, व्याख्यान आख्यान एवं उपाख्यान ब्रह्मांड की उत्पत्ति एवं प्रकृति की अनेकानेक घटनाओं को बांधकर उन लोकगाथाओं को श्रोत परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी उसका हस्तांतरण करती आई हैं। आज जो भी इस परंपरा से प्राप्त थाती है, उसे गीतो, कथाओं, लोकनाट्या् व लोक सुभाषितों में हमारे लोग जनमानस ने संभाल कर रखा है। हिमाचल प्रदेश हिमालय का एक ऐसा क्षेत्र विशेष है, जहां सामाजिक विकास और संस्कृति के चीर पुरातन युगों के अनेकानेक प्रमाण विद्यमान है। जो इस प्रदेश की लोक गाथाओं के रूप में प्रमाणिकता को और अधिक पुष्ट

करते हुए, संजोने का प्रयास करते हैं। हिमाचल प्रदेश का जन्म 15 अप्रैल सन 1948 को भारत के 18 वे राज्य के रूप में विश्व के मानचित्र पर उभरा। परंतु इसकी संस्कृति और सभ्यता अति प्राचीनतम मानी जाती है। हिमालय का संबंध सृष्टि के महाप्रलय के जल प्लावन के समय से मनु महाराज से माना जाता है। जो नौका से हिमालय के मन्वायलय, जिसे आज मनाली कहा जाता है, नामक स्थान पर पहुंचे थे। सप्तम मन्वंतर के मानव सृष्टि वैवस्वता मनु से संबंधित है, जो ऋषि प्रजापति के रूप में मानव सृष्टि को आगे बढ़ा रहे थे, उनका सीधा संबंध हिमाचल प्रदेश से रहा है। यही कारण है कि इसके लोग एवं सामाजिक जीवन में मानव सृष्टि के आदिकाल के साक्षी हैं।

लोक गाथा

लोक गाथाएं लोक संगीत का अभिन्न अंग है, जिनमें भौतिकवाद वैदिक वांङमय से वर्णित सृष्टि रचना का इतिहास क्रम परवर्ती पुराणों, स्मृतियों आदि में विस्तार से वर्णन किया गया है। इसी प्राचीन इतिहास की परंपरा वेदा, पुराणों, स्मृतियों से होती हुई लोक गाथाओं तक पहुंची है। वेद एवं गंभीर विषयों तथा राज्यों को पुराणों में सरल सरस कथात्मक एवं प्रतीकात्मक शैली में वर्णित करके जनसाधारण के लिए सुबोध एवं सुगम, संगीत के माध्यम से बनाया गया है। फलस्वरूप वेदों की यह परंपरा पुराणों की सरल सरल शैली में जन साधारण तक पहुंची तथा इनका ज्ञान परंपरा स्मृतियों शास्त्रों एवं काव्य आदि के विभिन्न प्रभावों से विभिन्न पडावों से होती हुई, लोक गीतों एवं लोक कथाओं में समाहित हुए अर्थात लोक जीवन में वर्णित लोक गाथाएं कलोल कल्पित नहीं है, हमारा प्राचीन वांङमय ही इनका आधार है। इतिहास एवं अनुसंधान की दृष्टि से यह लोक गाथाएं बहुत ही महत्वपूर्ण है। जिन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है।

1 प्रकृति से संबंधित अर्थात प्रकृति का इतिहास
2 पृथ्वी पर मानव का इतिहास।

प्रकृति का इतिहास :– लोक आख्यानों में अनेक प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति के आख्यान प्राप्त होते है, भौगोलिक विविधता के कारण हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में अपनी–अपनी बोली व स्थानीय भाषा के अनुरूप उनका गाथाओं का पाठ किया जाता है। उदाहरण के लिए सृष्टि रचना के संदर्भ में कांगड़ा हमीरपुर क्षेत्र में 'ओमकारा गायन' मंगलाचरण के रूप में प्रसिद्ध है।

यथा

ना थी धरती, ना था मंडल,
बरतिया धुंध कारा
न था चंद्र, न था सूरज,
न था नौ लख तारा
अलख निरंजन एक ब्रह्मा था

वही चंबा क्षेत्र में यही संदर्भ इस प्रकार से गाया जाता है :–

न थिया धरती ना थिया गासा,
न थिया मेरु, कमलहासा हां
न थिया पौण, न थिया पानी,
न थिया सूरज, न थिया चंद्रमा
न थिया नौलखा तारे हां
जलबिंबी जल बिंबी
घोर निहारा हां
एक हुंकारा नया अवतार।

अतः सृष्टि संबंधी इन रचनाओं में वर्णित इतिहास वह विवरण लगभग एक जैसा ही है, जिसका समर्थन विष्णु पुराण भी करता है। जहां इस बात को इस प्रकार से वर्णित किया गया है।

नाहो न रात्रिन नभो न भूमिर्नासीत्तमोज्योतिभ्च्य नान्यत्।
श्रोतादि बुद्धयानुपलभ्यमेकं प्राधानिकं ब्रह्म पुमास्तदासीत् ।।

अर्थात सृष्टि से पूर्व ना दिन था ना रात थी ना आकाश थाना भूमि थी ना अंधकार था ना प्रकाश था केवल मात्र ब्रह्म की ही सत्ता थी। जो कि इंद्रियों एवं बुद्धि द्वारा भी ग्राहृय नहीं था। अतः सृष्टि उत्पत्ति से इस स्थिति का वर्णन लोक गाथाओं के गायन में होता है जो वेद पुराण और स्मृतियों के आधार पर शास्त्र सम्मत है।

पृथ्वी पर मानव इतिहास : – यह लोक कथाएं सृष्टि के आरंभ से प्राचीन इतिहास का स्रोत है जिन का अध्ययन कर अनुसंधान की दृष्टि से इनका सरक्षण करना अति आवश्यक है।

पृथ्वी पर मानव इतिहास के परिपेक्ष्य में लोक गाथाओं के वर्णित आख्यानों को अनेक विद्वज्जनों ने विभिन्न प्रकार से वर्णित किया है। उदाहरण के लिए गाथाओं के पंडित गोविंद चातक ने अपनी पुस्तक मध्य पहाड़ी भाषा का भाषा शास्त्रीय अध्ययन में इतिहास अवलोकन के लिए हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध लोक गाथाओं को तीन भागों में बांटा है जिनमें धार्मिक गाथाएं वीर कथात्मक गाथाएं और प्रेमाख्यानात्मक गाथाएं।

वहीं बहुत से विद्वज्जन इन लोक गाथाओं को तीन भागों में न बांट कर चार भागों में बांटते हैं। जिनमें धार्मिक गाथाएं, देवी–देवताओं से संबंधित गाथाएं, वीर कथात्मक गाथाएं और प्रेमाख्यान। यद्यपि देवी देवताओं से संबंधित कथाएं भी धार्मिक गाथाएं ही हैं किंतु इन गाथाओं में गृह देवता, कुल देवता, ग्राम देवता, स्थान देवता, वैदिक देवता, लोक से देवत्व प्राप्त किए हुए अलौकिक देवताओं आदि का इतिहास भी समाहित होता है। जिसे हिमाचल प्रदेश के विभिन्न देवी–दवताओं के इतिहास में देव भारथाओं के नाम से जाना जाता है इसलिए विभाजन को तीन भागो मे न बाँट कर चार भागों में बांटा जाता है।

1 धार्मिक गाथाएं 2 देवी–देवताओं से संबंधित गाथाएं 3 वीर कथात्मक गाथाएं और 4 प्रेमाख्यान गाथाए

धार्मिक गाथाएं :– लोक संगीत में वर्णित धार्मिक लोक गाथाएं, वेदों से संबंधित गाथाएं, रामायण महाभारत से संबंधित गाथाएं और पुराण संबंधी का गाथाएं इन तीन रूपों में धार्मिक कथाओं को देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिला में प्रचलित बरलाज गायन राजा बलि के ऐतिहासिक संबंध संदर्भ निबंध है, सृष्टि रा जुगणाअ गाथा ऋग्वेद के दशम मंडल में शक्ति द्वारा रचे जाने की ओर संकेत करता है, बेदेऊल गाथा में ब्रह्मा के निःश्वास रूप चार वेदों का विवरण विद्यमान है। कई ज़िलों में रामायण से संबंधित लोक गाथाओं का वर्णन है। वही चंबा की एंचलि ने भगवान शिव विवाह से संबंधित कथानक का समावेश पाया जाता है कि वह किस प्रकार से गौरा के विवाह के लिए गए और उनके रास्ते में किन–किन स्थानों पर उनकी बारात रूकती है। ऐसा ही भगवान राम से संबंधित गाथाएं अनेक जिला में भी प्रचलित है जो उनके बनवास इत्यादि के कथानक पर आधारित है। वहीं दूसरी ओर शिमला में गाए जाने जरमाअल़ गाथा जो बम्टा के देवता महाराज डकरेई के पूजा के समय में गाई जाती है, इस गाथा में सृष्टि के हूम अर्थात यज्ञ मैं सृष्टि की उत्पत्ति केवल एक का वर्णन किया जाता है ।

2 देवी–देवताओं से संबंधित गाथाएं देवी :– देवताओं से संबंधित लोक गाथाओं में के कथानक धार्मिक गाथाओ के समान ही हैं किंतु इन कथानको में उस क्षेत्र विशेष के दृश्य देवता कुल देवता ग्राम देवता स्थान देवता वैदिक देवता लोक से देवत्व प्राप्त किए हुए अलौकिक देवताओं की इतिहास को निबंध किया जाता है। जिसे देव परंपरा में 'भारथा' कहा जाता है अर्थात देवता अपने द्वारा किए गए कार्यों, अपनी उत्पत्ति, अपनी वीरता व अपने क्षेत्र में किए गए उसके अनेकानेक चमत्कारों का वर्णन करता है। यथा

देव भारथा, दव चरितों और देवाख्यानो में सिरमौर जनपद के हाब्बण की टोकरू माता गाथा, कुल्लत् प्रदेश के नीणू गांव के नासद गाथा, किन्नौर जनपद की सावणिया गाथा।

3 वीरतात्मक लोक गाथाएं :– वीरतात्मक लोक गाथाएं वै लोक गाथाए हैं, जो यहां के आर्यो की एक जाति खश जो अपनी वीरतापूर्ण कार्यों के लिए जानी जाती है। खश जाति दो भागो मै बंटी ह, 'शाठी' जाति अपना संबंध कौरवों से मानती है एवं 'पांशी' जाति अपना संबंध पांडवों के साथ मानती है। हिमाचल के अनेक जिलो शिमला, सिरमौर, किन्नौर,मंडी तथा कुछ अन्य स्थानो मे खशो की ये जातियां रहती हैं। खशो के इतिहास संस्कृति सामाजिक विकास और सभ्यता के कालक्रमिक इतिहास इन लोक गाथाओं मे निबद्ध है। जिन्हें पवाड़ा, हारूल, हार तथा झेडे आदि के नाम से जाना जाता है। इन लोक गाथाओं के अनेक अनेक उदाहरण प्रमाण स्वरूप दिए जा सकते हैं जैसे शाठी पांशी लिंबर, सिंघा वजीर गाथा, राम सिंह पठानिया गाथा, राजा भंगालिया गाथा, महाराजा संसार चंद झेड़े इत्यादि अनेक लोक गाथाएं अपने अपने कालखंड के इतिहास का वर्णन करती हैं।

4 प्रेमाख्यानात्मक लोक गाथाए :– लोक गाथाओं के माध्यम से अनकानेक ऐसे ऐतिहासिक घटनाक्रम प्रसंग एवं लोक जनमानस में प्रचलित हैं जिन्होंने अपने प्रेम को पाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। समाज के प्रचलित रिवाजों के विरुद्ध जाकर अपने प्रेम को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया। जिनके हिमाचल की लोक गाथाओं में अनेकानेक उदाहरण है कुंजू चंचलो, हीरादैई, भून्कू गद्दी, राजा संसार चंद एवं गद्दण का प्रेम प्रसंग, धोबन इत्यादि प्रेम प्रसंग आज भी हिमाचल के लोक इतिहास में जीवंत हैं।

सारांश – आदिकाल से ही लोक गाथाएं इतिहास को जीवंत रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती आई हैं, जिसमें लोक कलाकारों का बहुत बड़ा योगदान है। जिन्होंने इन कथानकों को बहुत ही सरल एवं सहज भाषा में प्रचलित कर इतिहास को संजोने का प्रयास किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से लोक गाथाएं उन बीच की कड़ियों को जोड़ने का माध्यम बन सकती है, जो किसी कारणवश आज के इतिहास के विस्मृत कड़ियों के रूप में है किंतु इन कड़ियो को जोड़ने के लिए अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण से जब तक जांचा परखा नहीं जाएगा। तब तक इन कड़ियों का जोड़ना संभव नहीं है। धार्मिक गाथाओं को वेदों पुराणों संहिता के आधार पर उनका विश्लेषण कर उनको आज के संदर्भ में फिर से परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है। ताकि आज की पीढ़ी उन परंपराओं को वह स्थानों से परिचित हो सकें। देवभाथाओं को संजोने का कार्य देव परंपरा के लोगों ने भली–भांति किया है किंतु इन लोक गाथाओं एवं उनके संदभां को पुनः खोज कर उजागर किया जाना आवयक है। जिसके लिए इनके गायक कलाकारों को ढूंढ कर उनसे ये लोक गाथाएं ध्वनि मुद्रित रूप में प्राप्त कर एवं उनसे राजाओं के इतिहास को जाना जा सकता है। वही प्रेमाख्यानात्मक गाथाएं सदैव लोगों के आकर्षण का केंद्र रही हैं। उन लोक गाथाओं के मार्मिक संदर्भों को सरल भाषा में अनुवाद किया जाना अत्यंत आवश्यक है। ताकि सभी लोग उनका रसास्वादन कर सकें। अतः हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में इन लोक गाथाओं को ऐतिहासिक एवं अनुसंधान की दृष्टि से पुनः चिंतन मनन करना अत्यंत आवश्यक है। ताकि भावी पीढ़ी को उनके इतिहास से परिचित करवाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ :–

1 मध्य पहाड़ी भाषा का भाषा शास्त्रीय अध्ययन – गोविन्द चातक, राधा कृष्ण पब्लि0दिल्ली
2 वैदिक आर्य और हिमाचल प्रदेश – एम आर ठाकुर, एच जी पब्लि0 नई दिल्ली
3 लोक गाथा दिग्दर्शिका – डा0 ओम प्रकाश शर्मा, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी , हमीरपुर हि0प्र0
4 पहाड़ी भाषा – मौलू राम ठाकुर, सन्मार्ग प्रकाशन, बैंग्लो रोड, दिल्ली।